International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 6, pp: 449-453 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

1857 के क्रान्तिकारी प्रथम शहीद मंगल पांडे

Md. Jamil Hassan Ansari
मो. जमील हसन अंसारी
इतिहास विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा-846008 (बिहार)

Date of Submission: 15-09-2020 Date of Acceptance: 24-09-2020

सारांश;

स्वतंत्रता संग्राम की बात हो और अमर जवान मंगल पांडे का जिक्र न हो, ऐसा संभव नहीं, इतिहास साक्षी है कि अपनी भारत माता को गुलामी की जंजीरों से आजाद कराने के लिए संघर्ष करने वाले इस वीर से तो एक बार अंग्रेज शासन भी बुरी तरह से कांप गया था और सही मायने में देश में आजादी का को ये देष कभी नहीं भुला सकता क्योंकि के लिए जो आंदोलन हुआ दरअसल यह नितांत आवष्यक है कि बिगुल मंगल पांडे ने ही फूंका था, उनके बलिदान इनका योगदान अविस्मरणीय है। भारत में स्वतंत्रता कि मेरे प्रस्तुत आलेख के माध्यम से इस विद्रोह के महानायक मंगल पांडे की भागीदारी को जिस प्रकार से चिन्हित किया गया है जनमानस यह जाने की मंगल पांडे एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने 1857 ई. में भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका बंगाल इंफेन्ट्री के सिपाही थे। तत्कालीन अंग्रेजी मिका निभाई | वो ईस्ट इंडिया कंपनी की हिन्दुस्तानी उन्हें आजादी की लड़ाई के नायक के रूप में सम्मान देता है। साथ ही भारत के स्वाधीनता संग्राम में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को लेकर भारत सरकार द्वारा सम्मान में सन् 1984 में एक डाक टिकट जारी किया गया। शोध कार्य 1857 ई. के महाविद्रोह में मंगल पांडे के योगदान को इंगित करता है।

मुख्य शब्द :

1857, स्वतंत्रता संग्राम, मंगल पांडे, एनफील्ड राइफल, कारतूस, ब्रिटिष सरकार, विद्रोह, सैनिक, कक्तरंजित, क्रान्ति, फाँसी,, बलिदान, शहीद 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भारत माँ के अनेक सपूतों ने अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया था, उनमें से ही एक नाम जो भारतीय इतिहास में मंगल पांडे के नाम से अमर हुआ। स्वतंत्रता संग्राम के वे प्रथम शहीद थे, जिन्होंने अपने देष की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजा पर पहली गोली चलाई थी। हालाकि उनन्ह इसके परिणाम का आभास तो था परंतु वह दासता की पीड़ा से इतने व्याकुल ही हो चुके थे कि मृत्यु तथा फाँसी या फिर यूँ कहा जाए कि किसी भी दुष्परिणाम का भय उनके दिल से निकल चुका था। उन्होंने सर्वप्रथम धर्म तथा स्वतंत्रता के लिए कर्त्तव्य का पालन करते हुए मुक्त मन से ब्रितानी अधिकारी पर गोली चलाई । गौरतलब है कि इस प्रकार वे हँसते-हँसते फाँसी के फन्दे पर लटक गए और भारतीय इतिहास में अपना नाम अमर कर गए। उनका साहस धन्य और वन्दनीय था। भारत की स्वतंत्रता की बलिवेदी पर मिटने वाले अन्य वीरों की भाँति उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं और रहेगा।'

मंगल पांडे एक महान योद्धा न होकर सेना में एक साधारण सिपाही थे, जिनके मन में देष के लिए मर मिटने की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। मंगल पांड जी का जन्म भारत में उत्तर प्रदेष के बलिया जिले के दुगवा नामक गाँव में 49 जुलाई 1827 को हुआ। मंगल पांडे सरयूपारी (कान्यकुब्ज) ब्राह्मण थे। उनके माता-पिता साधारण परिवार के थे। वे अधिक पढ़े-लिख नहीं थे। साधारण हिन्दी भाषा जानते थे।* मंगल पांडे सन् 1849 ई. में 22 साल की उम्र के थे जो युवाअवस्था ही था और इसी उम्र में ब्रिटिष ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में भर्ती हो गए थे।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 6, pp: 449-453 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के मंगल पांडे कोलकाता के बैरकपुर की 19वीं रेजीमेण्ट में एक साधारण सिपाही थे। वे बड़े साहसी, आचरण से सुशीलवान, स्वभाव से तेजस्वी और आयु से तरुण मंगल पांडे से उनक मित्र उनसे इतने प्रभावित थे कि वे उनके लिए कुछ भी करने के लिए हमेषा ततूपर रहते थे।*

1857 ई0 तक भारत में विद्रोह का वातावरण पूरी तरह तैयार हो चुका था और अब बारुद के देर में आग लगाने वाली केवल एक चिगारी की आवष्यकता थी। यह चिगारी चर्बी वाले कारतूसों ने प्रदान की। इस समय ब्रिटेन में एनफील्ड राइफल का अविष्कार हुआ

01 जनवरी, 1857 ई0 को भारत में राइफल का प्रयोग आरंभ हुआ। ऐसा कहा जाता है कि एक दिन मंगल पांडे दमदम के कुएँ के निकट पानी भर रहे थे, तभी दमदम शस्त्रागार में कार्यरत मातादीन भंगी ने मंगल पांडे से पानी पीने के लिए लोटा माँगा तो उन्होंने लोटा देने से इन्कार कर दिया। तब अपमानित मातादीन भंगी ने मंगल पांडे से कहा कि - "बाबा तुम मुझे लोटा भले मत दो, लेकिन तुम्हें जब फौज में सूअर एवं गाय की चर्बी मिश्रित कारतूसों का प्रयोग करना पड़ेगा तब अपने धर्म को भ्रष्ट होने से कैसे बचाओगो |" इससे सत्य प्रकट हो गया। और यह बात सुनकर मंगल पांडे धर्म न छोड़ते हुए विद्रोह का मार्ग चुना कि भले जान चली जाए लेकिन अपना धर्म नाष नहीं करेंगे

इस समय ब्रिटिष सरकार ने 19 वीं पलटन पर ही कारतूसों का पहला प्रयोग किया परंतु कारतूस लेने से वह पलटन खुले रूप से मुकर गई। सिपाहियों ने स्पष्ट रूप से कहा, "जरूरत पड़ने पर तलवार भले ही उठा लेंगे, पर चर्बीयुक्त कारतूस का प्रयोग नहीं करेंगे।" वह कृत्य देखते ही हमेषा की तरह अंग्रेजों ने कठोर रुख अपनाया, परंतु अब वहाँ पहले के 'नेटिव' नहीं थे, उन्हें अपने विचारों में परिवर्तन करना पड़ा। इसका मूल कारण था कि उस समय बंगाल में अंग्रेज सेना की एक भी रेजीमेण्ट नहीं थी जो इस नेटिव सेना को नियंत्रण में रख सकें। अंग्रेज सरकार ने निष्चय किया कि मार्च के प्रारंभ मे बर्मा से अंग्रेज सेना के आने के बाद बैरकरपुर के सिपाहियों को निरस्त कर दिया जाएगा और रेजीमेण्ट को बंद कर दिया जाएगा

कारतूस में गाय तथा सूअर की चर्बी थी या नहीं इस विषय पर कुछ समय तक विवाद बना रहा। अंग्रेज सरकार ने तो यह धोषणा की कि कारतूस में किसी चर्बी का प्रयाग नहीं किया गया है, परन्तु हिन्दु और मुसलमान दोनों धर्म के सिपाहियों का यह मानना था कि सरकार झूठ बोल रही। दरअसल, उनकी भावनाओं को आघात पहुँचा अतः उन्होंने यह निष्चय किया कि वे किसी कीमत पर जुल्मी सरकार का आदेष नहीं मानेंगे और उन्होंने मिलकर विद्रोह का डंका बजा दिया।"

क्रांति के प्रमणिक लेखक सर जान के. ने स्वीकार किया हैं, "इसमें कोई संदेह नहीं कि इस मसाले को बनाने में गाय और सूअर की चर्बी का उपयोग किया गया था। " स्मिथ का कहना हैं कि "सत्य का पता चलने पर कारतूसों को वापस लेने से यह शक और भी बढ़ गया था। इसे कमजोरी का चिन्ह समझा गया जो अपवित्र इरादों की पोल खुल जाने पर किया गया था।" विख्यात इतिहासकार लैकी ने भी स्वीकार किया हैं कि "भारतीय सिपाहियों ने जिन बातों के कारण विद्रोह किया, उनसे अधिक जबरदस्त बातें कभो विद्रोह को जायज करार देने के लिए हो ही नहीं सकती |" इसी प्रकार से एक अन्य इतिहासकार विलियम लैकी का कहना हैं कि -"यह एक लज्जाजनक और भयंकर सत्य हैं कि जिस बात का सिपाहियों को विष्वास था वह बिल्कुल सच थी। " डॉ. ईष्वरी प्रसाद का कहना हैं कि "बढ़ते हुए असंतोष के इस वातावरण में चर्बी लगे कारतूसों ने बारुद खाने में चिंगारी का काम किया। कई ब्रितानी इतिहासकार कारतूसों के मामले को सन् 1857 की क्रान्ति का एकमात्र मुख्य कारण मानते हैं। लेकिन कुछ इसका इतना महत्त्व नहीं देते ।'"

लार्ड रॉबर्ट्स जो क्रान्ति के समय मौजूद थे, न लिखा हैं, "फोरेस्ट ने भारत सरकार के कागजों की जाँच करके यह सिद्ध कर दिया कि कारतूसों के तैयार करने में जिस चिकने मसाले का उपयोग किया गया था, वह वास्तव में दोनों पदार्थों अर्थात गाय और सूअर की चर्बी को मिलाकर बनाया जाता था और इन कारतूसों के बनाने में सिपाहियों के धार्मिक भावों की और इतनी बेपरवाही दिखायी जाती थी कि जिसका विष्वास नहीं होता ।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 6, pp: 449-453 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

उपर्युक्त विवेचन से इस बात की पुष्टि होती है कि सिपाहियों की आषंका सही थी,उनके सामने विद्रोह करने के अलावा अन्य कोई विकल्प शेष नहीं रह गया था।

29 मार्च का दिन भारतीय इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण दिन माना जाता है। इस दिन मंगल पांडे ने गोली चलाकर इस महान क्रान्ति को प्रारंभ कर दिया। कुछ लोगों ने इसके लिए मंगल पांडे को दोषी ठहराते हुए लिखा कि यदि निर्धारित तिथी 31 मई से पूर्व यदि वह गोली न चलाते, तो महान क्रांति असफल न होती। परंतु गौर करने वाली बात यह भी है कि मंगल

पांडे को इसके लिए समुचित दाषी ठहराना भी उचित प्रतीत नहीं होता। उस समय की माँग वह स्थितियाँ ही ऐसी बन चुकी थी कि कोई भी देषभकत अपने पर काबू नहीं रखा सकता था। मंगल पांडे ने 29 मार्च को जो गोली चलाई, इसके लिए दो अहम बातें हैं जिस पर ध्यान देना होगा। जिन दिनों 31 मई को क्रांति करने की योजना चल रही थी, उन्हीं दिनों यह अफवाह फैली कि अंग्रेज सरकार द्वारा सैनिकों को जो कारतूस दिए जा रहे हैं, इन कारतूसों को गाय एवं सूअर की चर्बी द्वारा चिकना बनाया जाता था। जिसे सैनिकों को मुँह से इसकी टोपी को काटना पड़ता था, जिन्हें वे अपने दाँतो से काटकर खोलते थे, उसके बाद ही ये कारतूस राइफल में डाले जाते थे। इस अफवाह से हिन्दु-मुसलमान सैनिक अंग्रेज सरकार के

विरुद्ध विद्रोह करने हतु तैयार हो गए।" हालाकि दूसरे सैनिक तो मौन रहे, पर मंगल पांडे अपने धर्म एवं देष के इस अपमान को सहन नहीं कर सके। व 31 मई तक प्रतीक्षा करने के बजाय शीघ्र ही अंग्रेज सरकार को सबक सिखाने को बेचैन हो उठे।*

29 मार्च का दिन भारतीय इतिहास में बहुत महत्व का दिन माना जाता है। इस दिन सुबह के 10:00 बजे मंगल पांडे ने बन्दूक भरी और उसे लेकर परेड के मैदान में जा पहुँचे। उन्होंने विद्रोह प्रारंभ करने का यही उपयुक्त अवसर समझा।

व 'पुभस्य शीघ्रम' में विष्वास करते थे या कबीर की भाषा में-

"काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होयेगी, बहुरि करेगो कब।।*

तुलसीदास के रामचरित मानस के इस दोहे से वे अत्यधिक प्रभावित थे कि -

"का वरषा जब कृषि सुखाने,
समय चूक पूनि का पछताने।"

मंगल पांडे की देषभक्ति के संबंध में दामोदार सावरकर ने लिखा है कि उन्होंने परेड के मैदान में अपने दोस्त सिपाहिया को ललकारते हुए कहा था कि -"भाइयों, चुपचाप क्यों बैठे हो, देष और धर्म तुम्हें पुकार रहा है। उठो, मरा साथ दो। फिरंगियों को देष से बाहर निकाल दो। देष की बागडोर उनके हाथों से छीन लो।" "

लेकिन इन सब बातों का कोई असर भारतीय सैनिकों पर नहीं पड़ा। दरअसल, वे किकर्तव्यविमूढ़ थे क्योंकि एक तरफ सरकारो आदेषों की अवहेलना थी और दूसरी तरफ गुप्त समिति के नेता आज निष्चित 31 मई से पूर्व विद्रोह करने को अनुमति नहीं दे रहे थे। इस दुविधा का ही असर था किवे अपने कर्त्तव्य को सुनिष्चित न कर सकें। हांलाकि बहादुर किसी क सहयोग की अपेक्षा नहीं करते किन्तु सैनिक अपने स्थान पर बैठे हुए चुपचाप मंगल पांडे की बात सुनते रहे, पर उन सबों ने कुछ उत्तर नहीं दिया। एसी गर्जना करते हुए वह अपने स्वेदष बंधुओं को अपने पीछे आने का जो आहवान करने लगे यह जब मेजर ह्यूसन ने सुना तो उसने सैनिकों को आदेष दिया कि, "मंगल पांडे को गिरफ्तार कर लो।/*

भारतीय सैनिकों ने सार्जेट मेजर ह्यूसन के आदेष का पालन नहीं किया। यद्यपि वे मंगल पांडे का साथ नहीं दे रहे थे, लेकिन वे उसे बंदी भी नहीं बनाना चाहते थे, क्योकि वे सब भी अंग्रेजों का विनाष चाहते थे। सैनिकों को मौन देखकर हयुसन ने फटकार लगाते हुए उपस्थित सैनिकों को कहा "मेरा हुकम मानों, पांडे को गिरफ्तार करो।" इस पर सिपाहियों ने स्पष्ट रूप से कहा कि "हम ब्राह्ममण देवता को कभी बन्दी नहीं बनाएँगे। "*

इसी समय मंगल पांडे ने झट से गोली चलाकर हयूसन साहब को धराषायी कर दिया। यह गड़बड़ हो ही रही थी कि इतने में लेफ्टिनेंट बॉ नामक दूसरा अंग्रेज सरकारी घोड़े पर सवार वहाँ आ गया। इससे

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 6, pp: 449-453 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

पहले कि घोड़ा आगे सरकता, मंगल पांडे की बंदूक से दूसरी गोली छूटी और वह घोड़ा के पेट में जा लगा जो लेफ्टिनेंट को लेकर गिर गया। मंगल पांडे पुनः बंदूक में गोली भर ही रहे थे कि लेफ्टिनेट बा उठकर खड़े हुए। उसने अपनी पिस्तौल से गोली चला दी हालांकि ईष्वर के कृपा से मंगल पांडे बाल-बाल बच गए। उधर बाँ अपनी तलवार निकाल ही रहे थे कि मंगल पांडे न अपनी तेजधार तलवार से वार कर वॉ को जमीन पर घाराषायी कर दिया।?

लेफ्टिनेट बॉ की मृत्यु के बाद तीसरे अंग्रेज अधिकारी को हमले की तैयारी में बढ़ता देख पास के एक भारतीय सिपाही ने अपनी बंदूक के कुन्दे से उसके सिर पर वार करके सर फोड़ दिया और सारे सिपाहियों के समूह से एक आवाज की गर्जना हुई कि -"मंगल पांडे को कोई हाथ न लगाए |"

तीन-तीन गोरों की लाषों से धरती रक्त से लाल हो गई थी। तभी कर्नल व्हीलर परेड मैदान में आ पहुँचे। उसने मंगल पांडे को पकड़ने का आदेष दिया, परन्तु सबों ने इस आदेष का पालन करने से इनकार कर दिया और यह कहा कि, "हम साँस रहते ब्राह्मण के बाल को भी नहीं छुएँगे

कर्नल व्हीलर ने अनुभव किया कि अब सिपाहियों के अंदर विद्रोह की भावना घर कर गई हैं, वह अपनी जान बचाने हेतु जनरल के बंगले में जाकर छिप गय। मंगल पांडे की गर्जना अपने रक्तरंजित हाथों से उच्च स्वर में ललकार रहे थे, "भाईयों हथियार उठाओं | समय आ गया हैं। " क्रान्ति की खबर बिजली की तरह सारे देष में फैल चुकी थी। जब जनरल हीसे को यह समाचार मिला तो कुछ यूरोपियन सैनिक लेकर मंगल पांडे की तरफ परेड मैदान में आ पहुँचा। हालाकि मंगल पांडे तो स्वंय मैदान में डटे रहे परन्तु उन्हें यह एहसास हुआ कि बाकी सैनिक उनका साथ प्रत्यक्ष रूप से नहीं दे रहे। इस हालात में मंगल पांडे ने फिरंगियों के हाथों पकड़े जाने को अपेक्षा मृत्यु को अपनाने का निष्वय किया और अपनी बंदूक से अपने सोने में गोली मार ली, जिससे वे घायल होकर धरती पर गिर पड़े। तुरन्त उस धायल अवस्था में उन्हें अस्पताल पहुँचाया गया जिनके स्वस्थ होने की सब प्राथनाएं करने लगे यह सन् 1857 क मार्च 29 तारीख थी ।

मंगल पांडे स्वस्थ हुए अब उनका कोर्ट मार्षल कर जाँच पड़ताल हुई। उन पर सैनिक अदालत में मुकदमा चलाया गया। उनसे अन्य विद्रोहियों का नाम पूछा गया परन्तु उन्हाने किन्ही का नाम नहीं बताया। उन्होंने स्वीकारा कि उन्होंने जिन तीन गोरों की हत्या की उनसे उनकी कोई शत्रुता नहीं थी। बल्कि जो भी किया अपने देष और धर्म के प्रेम में किया।*

सैनिक आदलत ने मंगल पांडे को मृत्यु दंड की सजा सुनाई और यह निष्चित हुआ कि 08 अप्रैल, 1857 ई. को उन्हें फाँसी पर लटकाया जाए। मंगल पांडे उस समय इतने चर्चित हुए कि कोई जललाद भी उन्हें फाँसी पर चढ़ाने हेतु तैयार नहीं हुए। अतः अंग्रेजो ने इस धटना को अंजाम देने के लिए कलकत्ता से चार जललागदों को बुलवाया और उन्हें विषेष पारिश्रमिक देने का प्रलोभन दिया। उन जललामदों को मंगल पांडे के विषय में कोई जानकारी नहीं थी और न यह पता था कि उन्होंने अंग्रेज पदाधिकारियों को मौत के घाट क्यों उतारा।

बहरहाल 08 अप्रैल 1857 ई. को आजादी के इस दीवाने को फाँसी के तख्ते पर लटका दिया गया। उस समय भी उनका मत्सक गर्व से ऊँचा था। अंतिम क्षण में भी गले में फाँदा पड़ जाने पर भी इस वीर पुरुष ने अपने किसी सहयोगी क्रान्तिकारी का नाम नहीं बताया। यद्यपि मंगल पांडे आज हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु उनके यष, त्याग एवं बलिदान पर ही मुग्ध होकर एक कर्नल ने लिखा है।?

"वन्दन करता हूँ वीर अमर रहेगी तेरी गाथा,
सदा झुकेंगे कोटि-कोटि, पग सिर मस्तक माथा।"

निष्कर्ष :

इस तरह सन् 1857 के क्रांतियुद्ध की पहली भिड़त हुई और इस रीति से मंगल पांडे के अमर, बलिदान की खबर बिजली की तरह सारे देष में फैली, जिससे चारों तरफ लोगों का असंतोष अंग्रेजों के प्रतिथा यह अब क्रांति में भड़क उठा। देखते ही देखते मेरठ, लखनऊ, दिल्ली, कानपुर एवं बिहार आदि तक सभी

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 6, pp: 449-453 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

राज्य इसकी चपेट में आ गए। यद्यपि 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम असफल रहा, परन्तु अंग्रेजों को यह जरूर अब महसूस हो चुका था कि वे अब और ज्यादा दिन तक भारतीय जनमानस पर शासन नहीं कर सकेंगे।"

स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम अमर शहीद मंगल पांडे ने अपने त्याग एवं बलिदान से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में जिस सिद्धांत के लिए मरे वह सिद्धांत चिरंजीवी हो गया और मंगल पांडे इतिहास में अपना नाम अमर कर गये। भारत माँ के इस सपूत के प्रति सभी भारतीय सदैव नत्मस्तक रहेंगे।

संदर्भ

1. एस. एल. नागोरी एवं प्रणव देव.,, 1857 के क्रांतिकारी, शीतल ऑफसेट, जयपुर, 2004,पृ0.32.
2. 70 50प्र23, जावाएह भैग्रांल, 1कक6ृववा ?7क्रवरण फवांकृा 5910; शा0ए्207१९वाव 8नॉगाग]ज९4.
3. विनयाक दामोदर सावरकर., 1857 का स्वातंत्र्य समर, प्रभात प्रकाषन, नई दिल्ली, 2007,पृ0.97.
4. कृाइवां ए7क्रावश: 77९ 59 ० वा उावांचा ?९एकंप्रधंगावाफ रिप३ & ५०., धैप्राएवां, 2005.
5. विनायक दामोदर सावरकर, पूर्वोकृ्तप, पृ0.97.
6. ताराचन्द हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेन्ट, इन इंडिया, वो. 1, दिल्ली, 1961 पृ0 47.
7. आर. सी. मजुमदार, हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेन्ट, वो.1, कलकत्ता, 1962, पृ0. 80-81.
8. एस. एल. नागोरी एवं प्रणव देव, पूर्वोक्त, पृ० 33.
9. विनायक दामोदर सावरकर, पूर्वोक्त पृ0, 96.
10. मनीता कुमारी यादव, बिहारी की जनता और 1857 ई. का विद्रोह, जानकी प्रकाषन, पटना, 2014, पृ0. 36.
11. ताराचन्द, पूर्वोक्त, पृ0. 47.
12. आर. सी. मजुमदार, पूर्वोकृ्त, पृ0. 80-81.
13. एस. एल नागोरी एवं प्रणव देव, पूर्वोक्त, पृ0. 35.
14. ताराचन्द, पूर्वोक्त, पृ0. 47.
15. विनायक दामोदर सावरकर, पूर्वोकृ्त, पृ0. 97.
16. एस. एल. नागौरी एवं जीतेष नागोरी, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के क्रान्तिकारी, पृ0. 34.
17. विनायक दामोदर सावरकर, पूर्वोकृ्त, पृ0. 97.
18. उपर्युक्त, पृ0. 97.
19. एस. एल. नागोरी एवं प्रणव देव, पूर्वोक्त, पृ0. 37.
20. विनायक दामोदर सावरकर, पूर्वोकृ्त, पृ0. 98.
21. उपर्युक्त, पृ0. 98.
22. विनयक दामोदर सावरकर, पूर्वोकृ्त, पृ0. 98.
23. एस. एल. नागोरी एवं प्रणव देव, पूर्वोक्त, पृ0. 38.
24. विनयाक दामोदर सावरकर, पूर्वोकृ्त, पृ0. 99.
25. एस. एल. नागौरी एवं जीतेष नागोरी., पूर्वोक्त, पृ0. 37.
26. विनायक दामोदर सावरकर, पूर्वोकृ्त, पृ0. 99.

आवासीय पता	संस्थान पता
मो. जमील हसन अंसारी **MD. JAMIL HASSAN ANSARI** पिता–मो. अकिल हसन अंसारी पता–मोहल्ला–कटहलबाड़ी (डी–लक्स टेलर्स) वार्ड नं.–13, डाकघर– लालबाग थाना–ल. ना. मि. वि. वि. प्रांगण, जिला–दरभंगा पिन कोड–846004 राज्य–बिहार (भारत) मोबाईल नं.-**+91-8539069445** ई–मेल :- **jamilh505@gmail.com**	मो. जमील हसन अंसारी **MD. JAMIL HASSAN ANSARI** इतिहास विभाग ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा–846008 (बिहार) मोबाईल नं.-**+91-8539069445** ई–मेल :- **jamilh505@gmail.com**